वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

(पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,भारत सरकार की एक स्वायत निकाय)

रांची - गुमला राष्ट्रीय राजमार्ग - 23, रांची (झारखण्ड) – 835303

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत

वन विज्ञान केंद्र (VVK) के तहत

फ्लेमेंजिया सेमियालता पर लाह की खेती

विषय पर प्रशिक्षण

दिनांक : 18.02.2022

स्थान : तुरीगढ़ा, तोरपा, खूंटी

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत वन विज्ञान केंद्र झारखण्ड के अधीन दिनांक 18.02.2022 को तोरपा के तुरीगढ़ा में फ्लेमेंजिया पर लाह की खेती विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमे जनप्रतिनिधियों सहित कुल 63 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए ग्राम सभा अध्यक्ष श्री सुरेंद्र बरवा ने संस्थान के दल का स्वागत करते हुए प्रतिभागियों से अधिकाधिक प्रशिक्षण का लाभ लेने की

अपील की। कार्यक्रम का परिचय कराते हुए श्री बी.डी.पंडित ने ग्रामीण प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम के विभिन्न पहलू एवं सम्बद्ध संस्थान के दल का परिचय कराया।

लाह पोषक वृक्षों की जानकारी देते हुए मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री एस.एन.वैद्य ने *फ्लेमेंजिया सेमियालता* की आवश्यकता, उसके लाभ तथा पौधे तैयार करने के विभिन्न आयामों को बताया। उन्होने बताया कि पारम्परिक लाह पोषक वृक्ष के बड़े होने तथा लाह उत्पादन लायक तैयार होने में अधिक समय लेने के कारण *फ्लेमेंजिया सेमियालता* को लाह उत्पादन के लिए वरीयता दी जाती है। पौधे तैयार करने की विधि, लाह लगाने का समय आदि को विस्तार से बताया।

फ्लेमेंजिया पर लाह की खेती करने की विधि को विस्तार से बताते हुए हुए श्री बी.डी.पंडित, तकनीकी अधिकारी ने जोर देकर कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष में फ्लेमेंजिया पर लाह की खेती के आय-व्यय को विस्तार से समझाते हुए सलाह दिया कि जब भी फ्लेमेंजिया पर लाह की खेती करें, आस-पास कुसूम पेड़ की उपलब्धता का ध्यान रखें जिससे लाह बीज उपलब्ध होता रहे।

श्री सुभाष चंद्र, वैज्ञानिक – डी, ने लाह कीट के जीवन को समझाते हुए इससे लगने वाले दुश्मन कीट के विषय में विस्तार से बताया एवं दुश्मन से बचाव के उपाय भी बताया। तीनों तरह के दुश्मन कीट की पहचान बताते हुए यांत्रिक, मानवीय एवं रासायनिक उपाय बताया।

श्री सूरज कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने लाह के उपयोग को विस्तार से समझाया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में वैज्ञानिक श्री सुभाष चंद्र तथा विस्तार प्रभाग के एस.एन.वैद्य, बी.डी.पंडित एवं सुरज कुमार का योगदान सराहनीय रहा।